Postal Regn. - RTK/010/2020-22
RNI - HRHIN/2003/10425

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र

जनवरी 2025 (प्रथम)

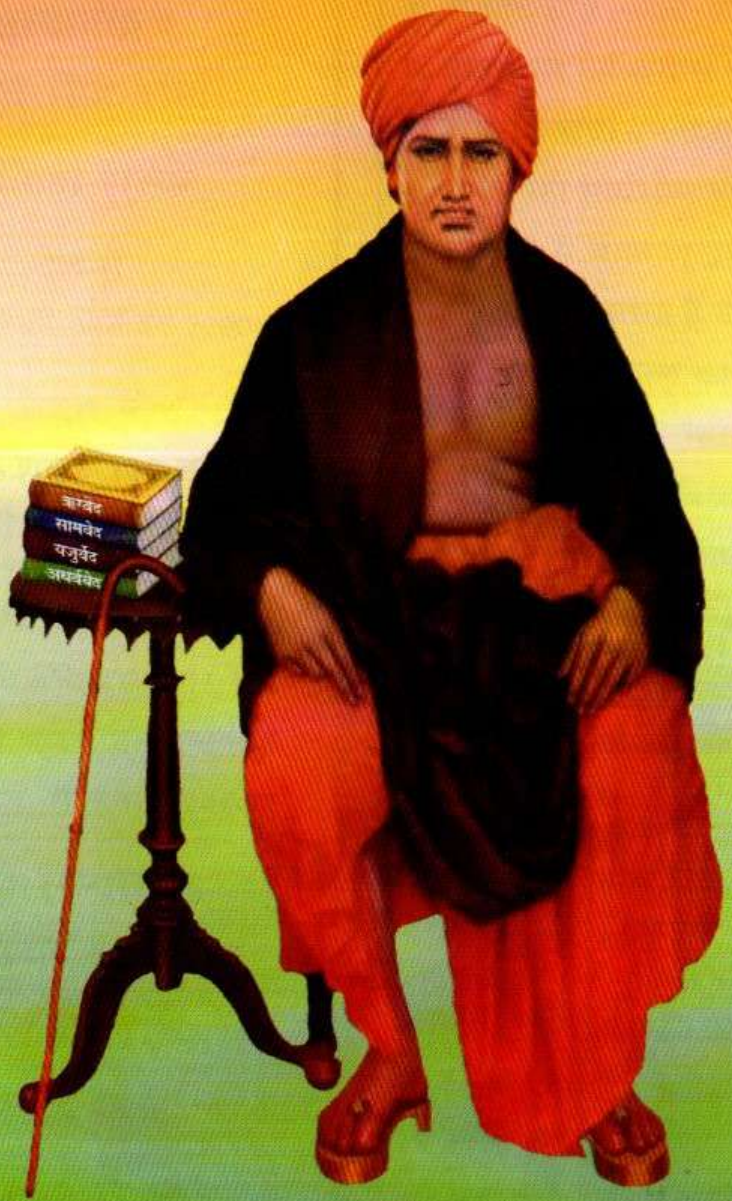

Email : aryapsharyana@yahoo.in

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Visit us : www.apsharyana.org

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,125
विक्रम संवत् 2081
दयानन्दाब्द 201

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 20 अंक 23

सम्पादक :
उमेद सिंह शर्मा

पत्रिका-शुल्क
देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये
विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सह-सम्पादक
आचार्य सोमदेव

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष :-
मो० 89013 87993

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

(जनवरी, 2025 प्रथम)
1 से 15 जनवरी, 2025 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—वेद-प्रवचन 2
2. ईश्वर पर अविश्वास क्यों ? 3
3. स्वास्थ्य चर्चा—लहसुन के अनेक लाभ 4
4. आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य 5
5. वेदज्ञान से युक्त शुद्धाचरण करने वाले मनुष्य का निर्माण करता है आर्यसमाज 8
6. आओ जानें परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् ही क्यों ? 10
7. हम क्यों हारे ? दास्तान-ए-गद्दारी (13) 12
8. महाकुम्भ—एक विचार मंथन 14
9. समाचार-प्रभाग व शेषभाग 15

आर्य प्रतिनिधि पाक्षिक पत्रिका के प्रसार में सहयोग दें

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने योग्य पत्रिका है। यदि आप इसके पाठक बनेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे अन्य लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करके ऋषि ऋण से अनृण होवें।

'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक का वार्षिक शुल्क 200/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2000/- रुपये है।

आप उपरोक्त राशि 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा' दयानन्दमठ रोहतक के नाम से बैंक ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा भिजवाकर सदस्य बन सकते हैं। —सम्पादक

सम्पादकीय...

वेद-प्रवचन

❑ संकलन—उमेद शर्मा, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

गतांक से आगे....

धन है तेरी कारीगरी करतार।
किये रंग-बिरंगे फूल और बादल,
रंग की रेनी कहीं नहीं।
पत्ते-पत्ते की कतरन न्यारी,
तेरे हाथ कतरनी कहीं नहीं।

यह केवल कविता-कलाप नहीं है, वैज्ञानिक सच्चाई है। जो लोग इस ऋत को समझकर उसके (प्रदिशः) उपदेष्टा हैं, वे संसार में आस्तिकभावों को फैलाकर मनुष्यों को ईश्वर का भक्त बना देते हैं। आस्तिकता का प्रसार ही ईश्वर को बढ़ाना या उसका महत्त्व वर्णन करना (glorifying God) है।

तीसरा काम है ब्रह्म का सृष्टि-संहार। जो उत्पन्न हुआ है, वह मरेगा। एक किनारे की नदी नहीं होती, जिसका आदि है उसका अन्त अवश्य है। केवल अनादि ही अनन्त हो सकता है। इस नियम के अनुसार समस्त जात-जगत् नश्वर है। उसका अन्त होना चाहिए। वेद में परमात्मा के संहार के कार्य को दृष्टि में रखकर 'दर्दिरः' कहा है। 'दृ' का अर्थ है विदीर्ण करना, मिली हुई चीज को अलग-अलग करना। 'दृ' धातु से यङ्लुक् के भृशार्थ में रूप बना **'दर्दरीमि'** (मैं प्रत्येक पदार्थ के टुकड़े करके उसको कारणरूप कर देता हूँ)।

यहाँ 'दृ' धातु का अर्थ 'बिगाड़ना' नहीं है, अपितु 'लय' करना या विश्लेषण करना है। बच्चे को घड़ी दीजिए। वह उसको पत्थर से तोड़ देता है। यह विश्लेषण नहीं है। घड़ी टुकड़े-टुकड़े हो जाती है, क्योंकि बच्चे को घड़ी के पुर्जों का कुछ ज्ञान न था। उनसे आप फिर घड़ी नहीं बना सकते। उसी घड़ी को घड़ीसाज को दीजिए। वह घड़ी के पुर्जों को जानता है। वह उसको खोलता है। वेद की भाषा में **'दर्दरीति'** (भृशं दृणोति)। पुर्जे जिस प्रकार जुड़े थे उसी प्रकार अलग हो गये। फिर जुड़ जायेंगे। इसी को कहते हैं कि कार्य अपने कारण में लय या लीन हो गया। जब प्राणी

मरता है तो जीव अलग हो जाता है और पंच-भौतिक शरीर के भिन्न-भिन्न अवयव अपने-अपने तत्त्व में मिल जाते हैं। आग्नेय अंश अग्नि में, वायव्य वायु में, पार्थिव पृथ्वी में, आप्य जल में, आकाश आकाश में। यह है—**'दर्दरीमि'**—(घड़ी का खोजना)। साधारण मनुष्य बच्चे के समान वस्तु को बिगाड़ सकता है, बिगड़े को फिर बना नहीं सकता। जो ऋतज्ञ वैज्ञानिक है वह जल का विश्लेषण करके घड़ीसाज के समान ऑक्सीजन और हाइड्रोजन को अलग-अलग कर सकता है और फिर उन्हें जोड़ (संश्लेषण) करके पानी बना सकता है। इससे आगे उसकी गति नहीं है। परमात्मा उसके आगे भी जाता है। प्रलय में समस्त कार्यरूप जगत् कारणरूप प्रकृति में लय हो जाता है। प्रलय के पश्चात् फिर सर्गोत्पत्ति होती है—**'यथापूर्वमकल्पयत्'** जिस प्रकार पहले सृष्टि बनी फिर भी बनेगी। यही ऋत का ऋतत्व है। अटल नियम कभी टूटता नहीं। सृष्टि का संहार करने वाला वही ब्रह्म है जिसने सृष्टि रची थी। रचना का वही उद्देश्य था जो लय का है। लय न हो तो फिर सृष्टि कैसे हो? यदि मृत्यु न हो तो दूसरा जीवन कैसे हो? हर प्रलय दूसरी सृष्टि का साधक है, बाधक नहीं। जब बच्चा माँ के पेट में होता है तो घरवालों को कितना हर्ष होता है, कितनी आकांक्षाएँ होती हैं और किन उमंगों के साथ नवजात शिशु का स्वागत होता है? यह सब कैसे होता यदि इससे पूर्व इस जीवन की मृत्यु न हुई होती? ईसाई-मुसलमान कहते हैं कि सृष्टि के अन्त में 'कयामत' होगी। कयामत का अर्थ है उठ खड़ा होना। इस सिद्धान्त में कुछ भ्रान्ति है। कयामत होगी परन्तु इस सृष्टि के अन्त में नहीं, अपितु प्रलय के अन्त में नए कल्प का आरम्भ ही कयामत है। 'प्रलय' का अर्थ है कारण में लीन होना। यह ब्रह्म की महती शक्ति के द्वारा ही हो सकता है।

ईश्वर पर अविश्वास क्यों?

❑ संकलन—कन्हैयालाल आर्य, संरक्षक—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

माताजी, यह हम पर निर्भर करता है कि हम सुख, आनन्द और मोक्ष की प्राप्ति करना चाहते हैं या दु:खसागर में गोते लगाना चाहते हैं।''

''माताजी! जिस कर्म का प्रारम्भ भ्रान्ति और मिथ्यापन से हो वह शुभ या कल्याणकारक कैसे हो सकता है? जड़ में आत्मा से पूजक की बुद्धि भी जड़ होने लगती है, क्योंकि जैसी संगति होगी, वैसे ही संस्कार होंगे।''

(5) साकार मूर्ति की पूजा में दोष कैसे?

सास ने पुन: प्रश्न उठा दिया और कहा, ''पुत्री! तुम कहती हो ईश्वर निराकार है, इसे अब मैं तुम्हारे द्वारा दिये ज्ञान से सत्य मानने लगी हूँ, परन्तु निराकार ईश्वर की पूजा करना कुछ अधिक कठिन है और साकार मूर्ति आदि की पूजा सर्वसाधारण के लिए बहुत सरल है, यदि दोनों प्रकार की उपासना-पूजा होती रहे, तो इसमें क्या दोष है?''

बहू ने उत्तर दिया, ''माताजी! जो आप यह कहती हैं कि मूर्ति की पूजा भी कर लेनी चाहिये, यह विचार युक्तियुक्त नहीं है, क्योंकि जो ईश्वर सर्वव्यापक है वह जैसे मूर्ति में है वैसे भेंट दी जाने वाले पुष्प, पत्ते, मिष्ठान्न आदि पदार्थों में भी है। यदि आप मूर्ति में ईश्वर मानती हैं तो इन पदार्थों में भी ईश्वर है। यह तो ईश्वर को ईश्वर पर चढ़ाना होगा। ईश्वर से ईश्वर की पूजा हो जायेगी। इसलिए मैं कहती हूँ कि मूर्ति (साकार) पूजा एक भ्रान्तिपूर्ण कर्म है अत: भ्रान्तिपूर्ण कर्म करना, भ्रान्ति में जीना बुद्धिमत्ता का लक्षण तो नहीं है। साकार और निराकार परस्पर विरोधी बातें हैं, निराकार कभी साकार नहीं हो सकता। यदि साकार की कल्पना भी कर ली तो उससे उपासना का सच्चा फल नहीं मिल सकता। आपके जीवन का सारा कर्मकाण्ड व्यर्थ जायेगा।''

''माताजी! आप कहती हैं कि निराकार की पूजा करनी कठिन है, परन्तु अभ्यास से वह सरल हो जाती है। किसी भी विद्या या ज्ञान की सिद्धि साधना और अभ्यास से ही सम्भव है। अभ्यास से कठिन से कठिन काम भी सरल और साध्य हो जाते हैं। शिक्षा और अभ्यास से पशु भी सुशिक्षित हो जाते हैं फिर मनुष्य तो और अधिक सुशिक्षित हो जाता है। अत: निराकार ईश्वर का अन्त:करण में ध्यान करना कोई कठिन कार्य नहीं है।''

''माताजी! वास्तविक बात यह है कि उपासना जड़ मूर्ति में हो ही नहीं सकती और न ही उसमें ध्यान एकाग्र हो सकता है, कारण यह है कि परमात्मा का मेल आत्मा में होता है और आत्मा शरीर के अन्तर्गत हृदय में स्थित है, अत: परमात्मा का मेल भी वहीं हो सकता है, बाहर नहीं। सब बाह्य विषयों के हट जाने पर शुद्ध मन में ही ईश्वर का ध्यान हो सकता है। अत: माताजी! यदि सच्चे शिव को पाना है तो हमें अन्तर्मुख होना होगा, निराकार ईश्वर में ध्यान लगाना होगा अन्यथा सारा प्रयास निरर्थक हो जायेगा।''

''माताजी! जो निराकार है वह साकार नहीं हो सकता और जो साकार है वह निराकार नहीं हो सकता। दोनों बातें एक-दूसरे के गुण-कर्म-स्वभाव के विरुद्ध हैं। उदाहरण के रूप में आप संसार के सूक्ष्म और व्यापक पदार्थों को देख लीजिए। जैसे आकाश, वायु आदि अति सूक्ष्म हैं और व्यापक हैं, उनका न तो कोई स्थूल आकार है और न ही बन सकता है। इसी प्रकार ईश्वर तो सूक्ष्मातिसूक्ष्म और व्यापक है, अत: उसके आकार की कल्पना करना भी सम्भव नहीं है।''

(6) ईश्वर को साकार मानने के दोष

यदि ईश्वर को साकार मानेंगे तो उसमें युक्ति के आधार पर अनेक दोष सिद्ध होंगे—(1) साकार ईश्वर सर्वव्यापक नहीं हो सकता, क्योंकि वह आकार ग्रहण करने से एकदेशी हो जाएगा फिर वह न तो सृष्टिकर्त्ता, धर्त्ता, प्रलयकर्त्ता ही हो सकता है और न सर्वशक्तिमान्, सर्वेश्वर हो सकता है, क्योंकि एकदेशी सीमित वस्तु के गुण, कर्म वाला कभी ईश्वरा नहीं माना जा सकता। क्रमश: अगले अंक में....

स्वास्थ्य-चर्चा

लहसुन के अनेक लाभ

गतांक से आगे....

दमा (अस्थमा) श्वास रोग

कारण-फेफड़ों में वायु वहन करने वाली नलियों की छोटी छोटी पेशियों में जब संकुचन पैदा होता है तब दर्द होता है और सांस लेने में तकलीफ होने लगती है। इसको श्वास रोग, दमा, तमक श्वास तथा अंग्रेजी में 'अस्थमा' कहते हैं। आमतौर पर यह रोग अधेड़ आयु के स्त्री-पुरुषों को होता है। इसके अतिरिक्त नाक की बीमारी, उपदंश, ब्रोंकाइटिस, जरायु की बीमारी, स्नायु विकार एवं धूल और धुएं आदि के वातावरण में अधिक समय तक रहने से यह रोग लग जाता है।

बच्चों में यह रोग फेफड़े और श्वास नली में कफ जमकर सूख जाने से होता है। बच्चों को यह रोग अक्सर खसरा के बुखार में अथवा कुकरखांसी होने के बाद होता है।

लक्षण-दमे की खांसी के तनाव श्वास-प्रश्वास में कष्ट होता है। जिस दमे में कफ कम निकलता है, उसे 'सूखा दमा' और जिस दमे में कफ ज्यादा निकलता है उसे 'तर दमा' कहते हैं। दमे का दौरा पड़ने पर रोगी बहुत बेचैन हो जाता है। तेज बुखार दस्त तथा सांस लेने में कष्ट होता है। गले में सांय-सांय की आवाज होती रहती है। श्वास कष्ट बढ़ जाने से रोगी का चेहरा नीला पड़ जाता है। शरीर पसीने से भीग जाता है। कफ निकल जाने पर कुछ राहत महसूस होती है। जाड़े तथा वर्षा ऋतु में यह बीमारी अधिक सताती है। इसका दौरा प्राय: सुबह के समय पड़ता है।

उपचार-20 ग्राम शुद्ध गाय के घी में 5 कलियाँ लहसुन की पीसकर भूनें। फिर इसे 10 ग्राम शुद्ध शहद में मिलाकर चाटते रहने से कुछ सप्ताह में दमा मिट जाता है।

एक कप गर्म पानी में 10 बूंद लहसुन के रस, दो चम्मच छोटी मक्खी का शहद मिलाकर रोजाना सुबह-शाम पीने से कुछ ही दिनों में दमा नष्ट हो जाता है।

आधा किलो लहसुन की कलियां छीलकर 500 ग्राम पानी में उबालें। कलियाँ नर्म पड़ जाने पर नीचे उतार लें। आधा किलो सिरका लेकर उसमें 250 ग्राम शक्कर मिलाकर शर्बत बना लें। इस शर्बत में लहसुन की उबली हुई कलियाँ मिला दें। दो कली रोजाना सुबह प्रात:काल चबाकर, ऊपर से एक चम्मच इसी शर्बत का पी लें। कुछ दिनों के उपचार से दमा रोग नष्ट हो जाता है।

दस बूंदें लहसुन का रस एक कप गर्म पानी में पीने से दमे का दौरा शान्त पड़ जाता है।

दमे का दौरा पड़ते ही लहसुन के रस की दो-दो बूंदें रोगी व्यक्ति की नाक में टपकाएं। हल्के गर्म पानी में लहसुन का रस डालकर रोगी को सुंघाएं और पीने को दें।

लहसुन और शहद पांच-पांच ग्राम तथा गाय का शुद्ध घी 10 ग्राम को आपस में घोटकर अवलेह जैसा बना लें। ऐसी एक-एक खुसक रोजाना सुबह-शाम सेवन करते रहने से तथा भोजन में दूध और चावल का प्रयोग करते रहने से क्षयरोग से मुक्ति प्राप्त कर रोगी दीर्घायु हो जाता है।

10 ग्राम लहसुन की कलियाँ 250 ग्राम बकरी के दूध में उबालें। 200 ग्राम दूध शेष रह जाने पर इसमें मिश्री मिलाकर पीयें।

दमे के रोगी को आपने देखा ही होगा। अगर वैसे ही लक्षण बच्चे में दिखाई दें तो लहसुन की कलियों की माला उसके गले में डाल दें। दमा अगर जोरों पर हो तो लहसुन की दस कलियाँ छील लें और पाँच-पाँच कलियाँ बच्चे के पैरों के तलुए पर रखकर ऊपर से कपड़ा लपेट दें ताकि कलियाँ तलुओं से सटी रहें। आप चकित रह जायेंगे कि लहसुन की गन्ध तलुओं में प्रवेश करके बच्चे की सांस नली और फेफड़ों के रोग मिटाकर दस मिनट में ही जादू कर जाएगी।

श्वास रोग लहसुनादि योग बहुत लाभदायक होता है इसका नुस्खा इसी पुस्तक के लहसुनयोग प्रकरण में देखें। यदि श्वास के दौरे के समय दें तो भी रोगी आराम का अनुभव करता है।

रोग के प्रारम्भिक एवं सामान्य अवस्था में लहसुन की भुनी हुई कली सेंधानमक मिलाकर प्रात:-सायं दो बार लेने से लाभ हो सकता है।

अथवा गरम पानी में लहसुन का स्वरस 15-20 बूंद तक दिन में तीन बार सेवन करना भी श्वास रोग में हितकर होता है अथवा लहसुन के रस से मिश्रित गर्म चाय का प्रयोग कराया जाये।

क्रमश: अगले अंक में....

आर्यों का भावी एजेण्डा—

आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य

❑ डॉ० महावीर मीमांसक

आर्यसमाज सन् 2024 को ऋषि दयानन्द के 200वीं जन्मशताब्दी के रूप में मना रहा है। मुझे नहीं मालूम कि इन वर्षों में आर्यसमाज की मूर्द्धन्य संस्था सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा और परोपकारिणी सभा (ऋषि दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा) ने किन कार्यक्रमों का निर्धारण करके पूरा करने की योजना बनाई है? अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन तो प्रतिवर्ष पहले से ही निर्धारित है, जो प्रतिवर्ष विश्व भर के किसी न किसी देश में होते रहते हैं। किन्तु उन अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलनों में किन कार्यों को पूरा करने का बीड़ा उठाया जाता है, मुझे मालूम नहीं? किन्तु ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का प्रतिवर्ष किसी न किसी देश में आयोजन प्रशंसनीय है, जिसका समर्थन और सहभागिता प्रत्येक आर्य को करना चाहिए।

मैं आर्यसमाज के सभी नेताओं, सभी विद्वानों, संन्यासियों एवं सम्पूर्ण आर्यजगत् का ध्यान एक ऐसे तथ्य की ओर दिलाना चाहता हूँ जिसे आर्यबन्धु भूल रहे हैं या उपेक्षा कर रहे हैं। यद्यपि आर्यसमाज के सभी कार्यक्रमों में अपने मिशन के रूप में किसी न किसी भाषण, प्रवचन में आर्यसमाज के महान् उद्देश्य को वेद के शब्दों में **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** कहकर याद तो अवश्य किया जाता है किन्तु **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की क्रियात्मक व्याख्या जो ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में की है उसे कभी भी घोषित नहीं किया और वह है आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य। इसी मिशन की क्रियात्मक पूरक व्याख्या है।

सत्यार्थप्रकाश का छठा समुल्लास जिसका उद्घाटक श्रीगणेश अभी तक नहीं हुआ है, जो अभी तक लिफाफे में सील लगा हुआ बन्द है, जिसको विषय बनाकर कुछ एक शोधार्थी छात्रों या विद्वानों ने कुछ संक्षिप्त लिखा है।

कौन-सा ऐसा विषय है जिस पर ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में स्पष्ट प्रमाणों और अकाट्य तर्कों के साथ नहीं लिखा है? सभी प्रकार के धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ और भिन्न-भिन्न स्थानीय परम्पराओं को गिन-गिनकर ऐसे चीरफाड़ करके निकाल फेंका कि समाज का शरीर पूर्णरूप से स्वस्थ सकल और शुद्ध होकर जैसे नवजीवन कर लिया हो। यह सर्वाङ्गीण क्रान्ति की गूंज विदेशों तक गई और विदेशों से यह सन्देश भारत में आया कि मैं भारत में एक ऐसी ज्वाला जलती हुई देख रहा हूँ जो विश्व भर की समस्त सब प्रकार की गंद को भस्मसात् कर देगी। वेदों का भाष्य प्रारम्भ करके ऋषि ने उद्घोष किया था कि मेरा वेदभाष्य पूरा होने पर विश्व में ज्ञान का प्रकाश फैलेगा। प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली का विस्तृत विवरण लिखकर ऋषि ने बड़े विश्वास से सन्तोष की सांस लेकर आशा की थी कि अब लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली पर विराम लगेगा और गुरुकुलों द्वारा आर्ष शिक्षा प्रणाली का प्रचलन होगा। **'स्त्रीशूद्रो नाधीयाताम्'** की मान्यता पूर्णत: खण्डित होगी, महिला शक्ति पुन: सञ्चित होगी और अछूत समझा जाने वाला सामाजिक शरीर का महत्त्वपूर्ण अंग समाज में पुन: अपना समान अधिकार प्राप्त करेगा। इत्यादि-इत्यादि।

इतना ही नहीं, सत्यार्थप्रकाश लिखने के अतिरिक्त सन् 1875 में ही ऋषि ने आर्यसमाज की स्थापना की जिस आर्यसमाज का जाल सारे देश में तथा विदेशों में शीघ्र फैल गया। सन् 1883 में अपने निर्वाण से पहले अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा की स्थापना की। इसी सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में आर्यों को भारत की गरिमा याद दिलाते हुए ऋषि ने लिखा, "सृष्टि से ले के पांच सहस्त्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती अर्थात् भूगोल में सर्वोपरि एकमात्र राज्य था।" ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों का विवरण देने के लिए इतिहास के अनेक भागों में बृहद् ग्रन्थों के अनेक भाग बन जायें तो भी विवरण पूरा न हो पाये। इतने कार्य ऋषि ने अपने छोटे से जीवनकाल में कर दिखाये।

ऋषि के इन क्रान्तिकारी कार्यों का परिणाम भी अद्भुत रहा। समूचा ब्रिटिश साम्राज्य हिल गया, देश में अकल्पनीय परिवर्तन हुवे, सभी धार्मिक अन्धविश्वासों का ऋषि ने चुन-चुनकर खण्डन किया। गर्हित सामाजिक परम्पराओं को जड़ से उखाड़ फेंका और शास्त्र के नाम पर प्रचलित भ्रान्त धारणाओं की ऐसी चीरफाड़ की कि उनका नामोनिशान तक मिट गया। भिन्न-भिन्न धर्मों (पन्थों) में प्रचलित अन्धविश्वासों का खण्डन करने के लिए ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश में योजनाबद्ध तरीके से लिखा। सर्वप्रथम हिन्दूधर्म में प्रचलित पौराणिक तथा अन्य अन्धी परम्परागत मान्यताओं का खण्डन सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में किया। बौद्ध और जैन मत की तर्कहीन मान्यताओं को 12वें समुल्लास में और यवनमत के मान्यताओं की बखिया ऋषि ने सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम 14वें समुल्लास में उधेड़ी।

हिन्दू धर्म (पौराणिकों) की सबसे गर्हित और समाज को तोड़कर टुकड़े-टुकड़े करने वाली सब से गर्हित और खतरनाक मान्यता थी, **'स्त्रीशूद्रो नाधीयाताम्'** अर्थात् स्त्री और शूद्रों को पढ़ने (वेद) का निषेध है।

ऋषि दयानन्द ने वैदिक प्रमाण **'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः'** इत्यादि वैदिक प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्त्री और शूद्र (निम्न वर्ग) के सभी लोगों को अध्ययन (वेदादि शास्त्रों) का अधिकार का विधान वेद स्पष्ट शब्दों में करता है। यह भी महिला शक्ति और जनशक्ति को संगठित करके एकसूत्र में बांधने की क्रान्ति का आन्दोलन जो ऋषि दयानन्द ने 1875 में ही सत्यार्थप्रकाश में घोषित किया। इतना ही नहीं, आर्यसमाज जिसकी नींव ऋषि ने सन् 1875 में मुम्बई में रखी, उसके छठे नियम में घोषित किया कि **'संसार का उपकार करना, इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति।'** अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा में सन् 1883 में **'अनाथों की सहायता और उनका उत्थान करना सभा का प्रथम उद्देश्य है।'** महिलाओं में समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए ऋषि ने प्रचलित प्रवृत्त किये। कृषकों (किसानों) को राजाओं का राजा उद्घोषित किया। अपने देश की स्वतन्त्रता और अपने देश का शासक राजा को विदेशियों के शासन को उखाड़ फेंकने का बिगुल ऋषि ने अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध सत्यार्थप्रकाश में फूंका। ह्यूम नामक विदेशी व्यक्ति ने कांग्रेस की नींव तो बहुत बाद में डाली अत: अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले और जेलों में जाने वाले 80 प्रतिशत आर्यसमाजी थे। निजाम के विरुद्ध चलाया गया हैदराबाद सत्याग्रह पूर्णत: आर्यसमाज द्वारा चलाया गया। इन्हीं सब क्रान्तिकारी योजनाओं की घोषणा के साथ ऋषि ने **'आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य'** नारा दिया, जो **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** की क्रियात्मक व्याख्या थी। इस शंखनाद के नारे की पृष्ठभूमि सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में वर्णित वह राजनीतिक सिद्धान्त हैं और उन सभी राजनैतिक सिद्धान्तों का आधार यही शंखनाद है जिसकी ध्वनि आर्यसमाज को सदैव जागरूक और अमर रखेगी।

ऋषि दयानन्द ने अपना मिशन केवल लेखन कार्य तक सीमि नहीं रखा, अपितु शास्त्रार्थ की प्राचीन परम्परा को भी चालू किया जो भारत के दर्शनशास्त्रों में सैकड़ों वर्षों तक चलती रही और जो कालचक्र के चलते मृतप्राय: हो गई थी। शास्त्रार्थ एक ऐसा अमोघ अस्त्र था जो श्रोता दर्शकों पर तत्काल प्रभाव डालता था और जिसमें प्रतिद्वन्द्वी तत्काल हार मानकर निरुत्तर हो जाता था।

पाठक समझ सकते हैं कि वह युग कैसा रहा होगा जिसमें निरन्तर युक्ति युक्त तर्क और प्रमाणों के बाण चलाते थे। ऋषि दयानन्द केवल वेद को ही स्वत: प्रमाण मानते, शास्त्र वेद के अनुकूल होने पर ही प्रामाणिक कोटि में आते थे। अत: ऋषि दयानन्द ने वेदों का भाष्य करना प्रारम्भ किया। ऋषि ने अपने वेदभाष्य की प्रामाणिकता अपनी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्थापित की।

ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी कार्यों का इस अत्यन्त संक्षिप्त लघु लेख में नामोल्लेख करना भी असम्भव है। ऋषि के इस अथक भगीरथ प्रयास का परिणाम यह हुआ कि आर्यसमाज न केवल भारत में ही अपितु आर्यसमाजों का जाल की तरह विस्तार सात समुद्र पार विदेशों में भी होने लगा। देश और विदेशों में ओम् की ध्वजा फहराने लगी और समूचा वातावरण **'ऋषि दयानन्द की जय'**,

'**वैदिक धर्म की जय**' इत्यादि गगनभेदी जयकार के नारों से गुञ्जायमान रहने लगा। यह समग्र प्रयास ऋषि ने महान् मिशन '**आर्यों का सार्वभौम साम्राज्य**' की ओर बढ़ते हुए कदमों का संकेत था। ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने गहरा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा में नहीं आ सका। ऋषि का यह कष्टसूचक वाक्य था।

ऋषि दयानन्द के क्रान्तिकारी कारनामों के प्रसङ्ग में यह भी उल्लेख है कि समाज में प्रचलित श्राद्ध प्रथा, विधवाओं की दासी प्रथा और महिला तथा शूद्र कहे जाने वह श्रमिक वर्ग का मन्दिरों में प्रवेश निषेध की समाज को काटने और टुकड़े-टुकड़े में बांटने वाली भयंकर प्रथा का तीव्र विरोध और खण्डन किया तथा समाज को टूटने से बचाकर जोड़ने की प्रबल शक्ति हिन्दू कहे जाने वाले समाज में उजागर की।

ये सभी कार्य आर्य साम्राज्य के दुर्ग की नींव (आधारशिला) रखने के थे, किन्तु वाह रे कराल काल और देश का दुर्भाग्य! महर्षि दयानन्द महाराजा जोधपुर के यहाँ रहते हुए वेदभाष्य कर रहे थे। एक दिन महर्षि ने महाराजा जोधपुर को उनके महल में नन्हींजान नामक वेश्या के साथ देखा। महर्षि ने तुरन्त महाराजा जोधपुर को कहा, शेरों की मांद में कुतिया का निवास! तभी से वेश्या के दिल में महर्षि को मारने का प्रबल विचार घर गर गया। वेश्या ने महर्षि के पाचक जगन्नाथ को अपने विश्वास में लेकर महर्षि को विष देने का षड्यन्त्र रचा।

पाचक जगन्नाथ ने वेश्या की योजना के अनुसार महर्षि दयानन्द को दूध में विष मिलाकर पिला दिया। विष इतना भयंकर था कि महर्षि के शरीर में फूट-फूटकर निकलने लगा। चिकित्सकों की चिकित्सा भी विफल हो गई। महर्षि को जोधपुर से आबू होते हुये अजमेर लाया गया। उत्तम कोटि के माने जाने वाले चिकित्सक भी इलाज करने में विफल हो गये। महर्षि को अजमेर में भिनाय की कोठी में रखा गया। सभी चिकित्सक विष की भयंकरता की और विष के कारण होने वाली भयंकर पीड़ा तथा महर्षि को ऐसी भयंकर पीड़ा में भी उफ तक न करते हुए देखकर अत्यन्त विस्मित थे। महर्षि के शरीर से विष फूट-फूटकर निकल रहा था। अन्ततोगत्वा 30 अक्तूबर सन् 1883 का दिन आया। लाहौर से महर्षि के भक्त दर्शनार्थ आये हुये थे। सायंकाल का समय था। महर्षि ने सब भक्तों को अपने कमरे से बाहर जाने को कहा, केवल एक नवयुवक को अपने पास रखा जिसका नाम था गुरुदत्त। गुरुदत्त महर्षि का कट्टर भक्त होते हुए भी नास्तिक था। सूर्य अस्त होने को आया, वह दीपावली का दिन था। महर्षि ने अपने अन्तिम समय में कहा, प्रभो! तुमने अच्छी लीला की तेरी इच्छा पूर्ण हो। यह कहते हुए महर्षि ने निर्वाण किया। समूचा देश दीपावली के दीपों से प्रकाशित हो गया किन्तु विश्व का एक महान् सूर्य अस्त हो गया। गुरुदत्त महर्षि की इस अन्तर्वासी (शब्दावली) को सुनकर और महर्षि की इस अन्तिम अवस्था को देखकर मानो जाप से इतने प्रभावित हुये कि कट्टर नास्तिक कट्टर आस्तिक बन गये। ऋषि के मिशन को पूरा करने का गुरुदत्त ने बीड़ा उठा लिया। अब वे पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी बन गये, ऋषि के मिशन को पूरा करने की धुन में मानो पागल हो गये हों। उनके मिशन का अन्तिम पड़ाव वही था, '**आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य**' अर्थात् '**कृण्वन्तो विश्वमार्यम्**' अथवा '**समग्र क्रान्ति।**'

(परोपकारी से साभार)

प्रेरक वचन

- समस्या को समझे बिना उसका समाधान संभव नहीं।
- अपात्र व्यक्ति को दिया गया दान अहित ही करता है।
- मानव का युद्ध जब खुद से होता है, तब उसका कुछ मूल्य होता है।
- अनुभव ही हमें आने वाली विपदाओं से लड़ने का हौसला देता है।
- सब कुछ क्षणभंगुर है, यश भी और यशस्वी भी।
- दान देने से कोई गरीब नहीं होता।

संकलन—भलेराम आर्य, गांव सांघी (रोहतक)

वेदज्ञान से युक्त शुद्धाचरण करने वाले मनुष्य का निर्माण करता है आर्यसमाज

❑ मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001 फोन-9412985121

देश और समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि सभी मनुष्यों की बुद्धि व शरीर के बल का पूर्ण विकास कर उन्हें शुद्ध ज्ञान व शक्ति सम्पन्न मनुष्य बनाया जाये। ऐसे व्यक्ति ही देश व समाज के लिये उत्तम, चरित्रवान्, देशभक्त तथा परोपकार की भावना से युक्त होते हैं व देश व समाज के लिए लाभदायक होते हैं। यह कार्य करता हुआ कोई संगठन दीखता नहीं है। सृष्टि के आरम्भ काल से ही यह कार्य वेद व वैदिक जीवन पद्धति के द्वारा होता आया है। महाभारत युद्ध के बाद वेदों के विलुप्त हो जाने के बाद से यह कार्य होना अवरुद्ध हो गया था। महाभारत युद्ध के बाद देश व विश्व में जो मनुष्य उत्पन्न हुए वह शुद्ध ज्ञान की दृष्टि से न्यून प्रतीत होते हैं। यदि वह शुद्ध वेदज्ञान से पूरी तरह से युक्त होते तो संसार में अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियां आदि प्रचलित न हुई होती। इसके साथ ही कहीं कोई अविद्यायुक्त मत-मतान्तर, पन्थ, सम्प्रदाय स्थापित व प्रचलित न होता। इसके विपरीत शुद्ध ज्ञान-विज्ञान पर आधारित एक ही मत, पन्थ व संगठन विश्व में होता जैसा कि सृष्टि के आरम्भ से महाभारत युद्ध तक पूरे विश्व में वैदिक धर्म वा वैदिक मत का संगठन था जिसे संसार के सभी लोग मानते थे और वेदों के अनुयायी ऋषि मुनि इस वैदिक धर्म का देश देशान्तर में प्रचार करते हुए उच्च चारित्रिक नियमों का पालन करते-कराते हुए समाज को सभी प्रकार के अज्ञान व पाखण्डों से मुक्त रखते थे।

आर्यसमाज कोई नया संगठन नहीं है। नाम नया कह सकते हैं, परन्तु यह वही कार्य करता है जो महान् वेदों के ज्ञानी तथा ईश्वर का साक्षात्कार किए हुए ऋषि, मुनि व विद्वान् किया करते थे। आर्यसमाज व इसके संस्थापक ऋषि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के सभी मन्त्रों, सिद्धान्तों व मान्यताओं की परीक्षा की थी और उन्हें ईश्वरप्रदत तथा ज्ञान-विज्ञान के सिद्धान्तों के सर्वथा अनुकूल पाया था। आज भी यही स्थिति है। वैदिक सिद्धान्तों का पालन करने से मनुष्य को अभ्युदय एवं निःश्रेयस की प्राप्ति होती है। ऐसा अन्य किसी मत व जीवन पद्धति से प्राप्त होता सम्भव प्रतीत नहीं होता। आर्यसमाज अपनी सभी मान्यताओं की परीक्षा व विवेचना करता है और सभी मान्यताओं को तर्क के आधार पर प्रतिष्ठित होने पर ही उन्हें स्वीकार कर उनका जन-जन में प्रचार करता है। आर्यसमाज का अपना एक मत-पुस्तक है जिसकी सब मान्यतायें वेदों से ली गई हैं और जो सृष्टि को बने हुए 1.96 अरब वर्ष बाद आज भी सर्वथा प्रासंगिक एवं व्यवहारिक हैं। संसार में वेद सबसे पुराने व आद्य ग्रन्थ हैं। वेदों के ज्ञान के अनुकूल उनकी व्याख्याओं से युक्त ज्ञान ऋषियों के ग्रन्थों में भी उपलब्ध होता है। वैदिक साहित्य के समान सत्य पर आधारित निर्दोष-ज्ञान मत-मतान्तरों की पुस्तकों में उपलब्ध नहीं होता। सभी मतों के पुस्तकों में वेद विरुद्ध कथन विद्यमान हैं। वेद सत्य व अहिंसा का पालन करने व कराने वाले आदर्श ग्रन्थ है। सभी मत-मतानतरों के ग्रन्थों का सर्वथा वेदानुकूल होना आवश्यक एवं अनिवार्य है। ऐसा होने पर ही संसार में सर्वत्र सुख व शान्ति स्थापित होकर मनुष्य परस्पर सौहार्द के साथ रहते हुए अभ्युदय व निःश्रेयस को प्राप्त हो सकते हैं। अतः आर्यसमाज द्वारा वेदों को अपनाना सारे संसार के लिये एक आदर्श उदाहरण है जिसे वेदेतर सब मतों के आचार्यों को जानकर अपने-अपने मत को भी विश्व के मनुष्य समुदाय के हित के लिए लाभकारी बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

ऋषि दयानन्द ने वेदों के सभी सिद्धान्तों व मान्यताओं का जन-जन में प्रचार करने के लिये आर्यभाषा हिन्दी में जिस प्रचार ग्रन्थ की रचना की है उसका नाम 'सत्यार्थप्रकाश' है। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में अपने ग्रन्थ की रचना का प्रयोजन बताते हुए वह लिखते हैं कि "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने

असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान् आप्तों (ऋषि व योगी जो सब समय ईश्वर को प्राप्त होकर उसी के चिन्तन तथा लोक कल्याण के कार्यों में संलग्न रहते हैं) का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्य असत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हित अहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्या अर्थ का पत्यिाग करके सदा आनन्द में रहें।''

ऋषि दयानन्द ने उपर्युक्त पंक्तियों में जो लिखा है व अकाट्य सत्य व व्यावहारिक ज्ञान है। सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने पर सत्यार्थप्रकाश सहित ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थ विद्या के ग्रन्थ सिद्ध होते हैं जो अज्ञान व अन्धविश्वासों से सर्वथा रहित है। सत्यार्थप्रकाश में सभी मत-मतान्तरों के साथ निष्पक्षता व न्याय का अनुसरण करते हुए सबकी अविद्यायुक्त बातों का प्रकाश किया है जिनसे समाज में अशान्ति उत्पन्न होती है और जो मनुष्य के जीवन में ज्ञान व सद्कर्मों की उन्नति में बाधक बनते हैं। अत: देश व समाज में सुख, शान्ति व कल्याण के विस्तार के लिये मत-मतान्तरों की सभी मान्यताओं की परीक्षा व समीक्षा की आवश्यकता है और उन्हें सत्य पर स्थिर व स्थित किया जाना भी समय की आवश्यकता है। यही कार्य ऋषि दयानन्द ने अपने समय में आरम्भ किया था और यही कार्य सृष्टि के आरम्भ से महाभारत काल तक हमारे समस्त ऋषि-मुनि, विद्वान् व आप्तपुरुष किया करते थे। जब तक यह कार्य किया जाता रहा भारत विश्व में चक्रवर्ती राज्य व ऐश्वर्य को प्राप्त था और जब से वेदों से पृथक् व दूर हुआ है, तभी से देश व समाज में अशान्ति, दु:ख, पराधीनता, अन्धविश्वास आदि वृद्धि को प्राप्त हुए और हमें अपमानित होना पड़ा है।

आर्यसमाज वेद, वैदिक साहित्य और सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के आधार पर मनुष्य का निर्माण करता है। वेद उच्च चारित्रिक मापदण्डों के पोषक हैं जिसका प्रचार व पोषण आर्यसमाज करता है। आर्यसमाज अपने सभी सदस्यों व अन्यों को भी ईश्वर व आत्मा विषयक सत्य ज्ञान उपलब्ध कराता है। ईश्वर व आत्मा का ज्ञान प्राप्त कर सभी मनुष्य ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना व भक्ति में प्रवृत्त होते हैं। इससे अविद्या दूर होती है तथा मनुष्य को ईश्वर की कृपा, सहाय व आश्रय प्राप्त होता है। मनुष्य के दुर्गुण, दुर्व्यसन व दु:ख दूर हो जाते हैं। आत्मा की उन्नति होती है। ईश्वर से आत्म बल व सत्प्रेरणायें प्राप्त होती हैं। दान व परोपकार की प्रवृत्ति वृद्धि को प्राप्त होती है। मनुष्य असत्य व अज्ञान से दूर होता है तथा स्वाध्याय, सत्संग व चिन्तन-मनन-ध्यान से अपने ज्ञान को बढ़ाता व उसे प्रवचन व प्रचार द्वारा पुष्ट करता है। उपासना, अग्निहोत्र-यज्ञ, वेदाध्ययन सहित वैदिक साहित्य के अध्ययन तथा समाजोत्थान के कार्यों से उसका यश व गौरव बढ़ता है। वह श्रेष्ठ चरित्रवान् बनता है। '**मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत्सर्वभूतेषु य: पश्यति स: पण्डित:॥**' (नीतिसार) अर्थात् दूसरी सभी स्त्रियां माता के समान तथा दूसरों का धन मिट्टी के समान है। सभी प्राणी अपनी आत्मा के समान हैं। इस नीतिसार के वचनों का वैदिकधर्मी पालन करते हैं। वैदिकधर्मी पुरुषार्थी बनता है। देशभक्ति से सम्पन्न होता है। देश के लिये बलिदान की भावनाओं से युक्त होकर समाज में एक आदर्श उपस्थित करता है। स्वदेशी संस्कृति, परम्पराओं व धार्मिक मान्यतायें, जो सत्य पर आधारित हैं, उनके प्रति समर्पित होता है। वह विदेशी अपसंस्कृति तथा वहां से मिलने वाले प्रलोभनों का शिकार नहीं होता। वह अपनी संस्कृति को विदेशियों द्वारा प्रवर्तित मत व परम्राओं को अच्छा न मानकर अपने महान पूर्वजों वेद व ऋषि-मुनियों की परम्पराओं को मानता है व सत्य की दृष्टि से आवश्यक होने पर उसी में सुधार करता है।

आर्यसमाज द्वारा स्वदेशी पर्वों व महापुरुषों की जयन्तियों को मनाने की परम्परा को पुष्ट व प्रचारित किया जाता है। शिक्षा व ज्ञान का प्रचार तथा अविद्या व अन्धविश्वासों का खण्डन किया जाता है। समाज में विद्यमान अवैदिक व अनुचित परम्पराओं का आर्यसमाज विरोध व सुधार करता है। ऐसा करने से ही एक शुद्ध ज्ञानवान तथा शुद्ध कर्मयोगी व पुरुषार्थी मनुष्य का निर्माण होता है। इस कार्य को आर्यसमाज ने अपने 150 वर्षों के इतिहास में बहुत उत्तमता से किया है। देश में वेद व सद्धर्म विरोधी शक्तियों के सहयोग न करने सहित धर्मान्तरण जैसी प्रवृत्तियों को गुप्तरूप से प्रवृत्त करने तथा अपने अपने-अपने मत की संख्या

शेष पृष्ठ 11 पर....

आओ जानें परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् ही क्यों?

❑ पं० सुरेशचन्द्र शास्त्री, धर्माचार्य—आर्यसमाज जींद शहर, हरियाणा मो० 9165038356

आदरणीय पाठकवृन्द! आज हम परमात्मा के मुख्य और निज नाम ओ३म् के संबंध में कुछ विचार करेंगे। यह तो आप सभी प्रबुद्धजन भलीभांति जानते हैं कि परमात्मा का निज और मुख्य नाम ओ३म् है, किन्तु ओ३म् ही परमात्मा का निज नाम क्यों है? उसकी विशेषताएं क्या है? संक्षेप से हम सब समझने का प्रयत्न करते हैं।

1. संसार में असंख्यों संज्ञा शब्द हैं इस सृष्टि में जितने पदार्थ हैं जितने मनुष्य आदि प्राणी हैं, सबके नाम हैं, क्योंकि नाम से ही वस्तु व मनुष्य आदि की पहचान होती है। जैसे यह संसार तथा संसार का प्रत्येक पदार्थ परिवर्तनशील है विकार युक्त है। वैसे ही सभी संज्ञा शब्द भी परिवर्तनशील हैं।

केवल ओ३म् नाम ही ऐसा है जिसमें कोई परिवर्तन, कोई विकार कभी नहीं आता। ईश्वर के गुण-कर्म-स्वभाव अनन्त हैं, इसीलिए उसके गौणिक, कार्मिक और स्वाभाविक नाम भी अनन्त हैं किन्तु अन्य नाम अन्य पदार्थों के भी हैं, व्यक्तियों के भी हैं और अन्य सभी नामों में परिवर्तन होता रहता है। जितने भी महापुरुष हुए देवी-देवता हुए किसी का भी नाम उदाहरण के लिए ले लीजिए अथवा आप अपना नाम भी ले सकते हैं। जैसे—राम, शिव, विष्णु, महादेव, रुद्र, महेश, दिनेश, देवी, सरस्वती, ब्रह्म इत्यादि।

अब परिवर्तन देखिए—एकवचन प्रथमा विभक्ति में रामः। द्वितीया में रामम्। तृतीया में रामेण। चतुर्थी विभक्ति में रामाय। पंचमी में रामात्। षष्ठी में रामस्य। सप्तमी में रामे.... इसी तरह शिवाय। विष्णवे। महादेवाय। रुद्राय। महेशाय। दिनेशाय। देव्यै। सरस्वत्यै, ब्रह्मणे इत्यादि विभक्तियों के अनुसार स्वरूप परिवर्तन होते रहते हैं, किन्तु ओ३म् ही ऐसा शब्द है, जिसमें किसी भी विभक्ति का कोई प्रभाव नहीं होता, कोई परिवर्तन नहीं आता। हो भी क्यों? जैसे—ईश्वर निर्विकार है, नित्य है, शाश्वत है, वैसे ही उसका मुख्य नाम भी नित्य, शाश्वत और निर्विकार है। फिर विकार कहां से होगा?

2. जितने भी संज्ञा शब्द हैं उन पर वचनों का भी प्रभाव रहता है उदाहरण के लिए जैसे—एक वचन में रामः। द्विवचन में रामौ। बहुवचन में रामाः इत्यादि से आप समझ सकते हैं। परन्तु ध्यान रहे! ईश्वर के मुख्य और निज नाम ओ३म् पर वचनों का भी कोई प्रभाव नहीं होता जानते हैं क्यों? क्योंकि ईश्वर एक है अनेक नहीं। इसीलिए वचनों का कोई प्रभाव नहीं होता यह विशेषता केवल ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् में ही है।

3. सामान्य रूप से भाषा विज्ञान को जानने वाले सभी लोग समझते हैं कि प्रत्येक संज्ञा शब्द पर लिंगों का भी प्रभाव अवश्य होता है जितने भी संज्ञा शब्द हैं। सभी संज्ञा शब्दों को तीन प्रकार से विभाजित किया जाता है—

1. पुलिंग, 2. स्त्रीलिंग 3. नपुंसकलिंग।

जैसे—शिव आदि पुल्लिग शब्द हैं देवी आदि स्त्रीलिंग शब्द हैं और ब्रह्म नपुंसकलिंग शब्द है। परंतु जैसे ईश्वर न तो पुल्लिग है, ना स्त्रीलिंग में है और न नपुंसक लिंग में है, परमात्मा तो अलिंग है। उसी तरह उस परमात्मा के मुख्य और निज नाम ओ३म् की भी यह विशेषता है कि वह किसी लिंग में नहीं आता। ना पुलिंग का प्रभाव होता है, ना स्त्रीलिंग का और न ही नपुंसकलिंग का। हमेशा एक जैसा ही रहता है जैसे परमात्मा अखंड, एकरस, नित्य, सत्य, शाश्वत, अलिंग, अविनाशी और परिवर्तन रहित है वैसे ही उसका नाम है।

4. जैसे संसार में विकृतियां आने पर मत-पंथ-मजहब पनपते रहे, वैसे ही अनेकानेक भाषाएं बोलियां निर्मित हुई और लोगों ने अपने सीमित ज्ञान के अनुसार अपने ईश्वर (इष्टदेव) के नाम भी अपनी-अपनी भाषाओं में रख लिए और सभी लोग अपने द्वारा रखे गए ईश्वर के नामों को ही मुख्य समझने लगे। परंतु आपको बताते चलें, संसार में वर्तमान समय में लगभग 6500 भाषाएं हैं, किन्तु सभी भाषाएं अपूर्ण हैं। संसार की किसी भी भाषा में सभी ध्वनियां समाहित नहीं हैं।

उदाहरण के लिए जैसे अरबी भाषा में 'प' की ध्वनि

नहीं है। अंग्रेजी में 'त' और 'द' की ध्वनि नहीं है। केवल देवभाषा संस्कृत को ही पूर्ण भाषा का गौरव प्राप्त है जिसमें सभी ध्वनियां समाहित हैं और परमात्मा का निज नाम ओ३म् भी संस्कृत में ही है।

5. जैसे परमात्मा सर्वव्यापक है सब कुछ उसी ईश्वर में ही समाहित है। सकल सृष्टि के बाहर और भीतर ईश्वर विद्यमान है। इसी तरह परमात्मा के मुख्य नाम की विशेषता यह है कि ओ३म् में सारी ध्वनियां समाहित हैं पूरी वर्णमाला समाहित है।

जो लोग संस्कृत भाषा विज्ञान को जानते हैं वह भलीभांति समझ सकते हैं पाणिनीय व्याकरण के अंतर्गत शिक्षाशास्त्र के अनुसार और प्रचलित भाषा के अनुसार भी वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' है तथा प्रथम अक्षर का प्रारंभ कंठ से होता है। यह भी समझने की बात है स्वर मुख्यरूप से तीन ही है (अ इ उ) और सभी स्वर इसमें समाहित हैं शेष स्वर तो यौगिक हैं और व्यंजनों को पांच वर्गों में विभाजित किया है। (क, च, ट, त, प) और अंतिम वर्ग का अंतिम वर्ण 'म' है तथा 'म' का उच्चारण स्थान ओष्ठ है। और म का उच्चारण करने पर ओष्ठ बंद हो जाते हैं। वर्णोच्चारण की क्रिया कंठ से प्रारंभ और ओष्ठ बंद करके समाप्त हो जाती है फिर कुछ भी नहीं बोल सकते। कण्ठ से ओष्ठ तक के बीच में ही उच्चारण क्रिया का स्थान है, इससे अतिरिक्त कुछ नहीं। परमात्मा के निज और मुख्य नाम की भी विशेषता यही है ओ३म् का उच्चारण कंठ से प्रारंभ होता है और ओष्ठों पर समाप्त हो जाता है। इसीलिए परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् ही है।

6. ईश्वर के मुख्य नाम ओ३म् के अर्थ को समझाने के लिए देवभाषा संस्कृत की पाणिनीय व्याकरण के अनुसार जिस तरह से सिद्धि की है, इस शब्द की 'अव' धातु से परिकल्पना की गई है जिसके 19 अर्थ हैं—रक्षण, गति, कान्ति, प्रीति, तृप्ति, अवगम, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ याचन, क्रिया, इच्छा, दीप्ति, अवाप्ति, आलिंगन, हिंसा, दान, भाग और वृद्धि।

गोपथ ब्राह्मण में ओ३म् शब्द को 'अप्लृ व्याप्तौ' धातु से सिद्ध करके दिखाया गया है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अमरग्रंथ सत्यार्थप्रकाश में ओ३म् शब्द का अर्थ समझाते हुए बताया है। अ से विराट् अग्नि विश्व आदि। उ से हिरण्यगर्भ वायु तेजस आदि। म से ईश्वर आदित्य प्राज्ञ आदि।

इस तरह एक ओ३म् शब्द के 29 अर्थ यहां पर समझाये गए हैं और आदि शब्द से अन्य अर्थों को समझ लेना चाहिए। एक-एक पदार्थ के संबंध में अन्य-अन्य बहुत से पर्यायवाची शब्द तो आपको मिल जाएंगे, परंतु एक ही शब्द के इतने अर्थ और कहीं नहीं मिलेंगे। केवल ईश्वर के मुख्य और निज नाम ओ३म् की ही यह विशेषता है, इसीलिए निश्चित रूप से समझ लीजिए। ईश्वर का मुख्य और निज नाम ओ३म् ही है। यही प्रभु साक्षात्कार का मुख्य साधन है। हम सबको इसी नाम से साधना करने की आवश्यकता है। इसी में हम सबका कल्याण है।

वेदज्ञान से युक्त शुद्धाचरण..... पृष्ठ 9 का शेष.....

बढ़ाकर देश का सांस्कृतिक स्वरूप बिगाड़ने के प्रयत्न होते देखे जाते हैं। आर्यसमाज इस स्थिति से अपने जन्मकाल से ही परिचित व सतर्क है। उसे अपने बन्धुओं से सहयोग की आवश्यकता है तभी आर्यसमाज शुद्ध मनुष्य बनाने के अपने मिशन में सफल हो सकता है। यही देश व विश्व में सुख व शान्ति स्थापित करने की सबसे प्रभावशाली योजना है। मानव के जीवन व चरित्र का सुधार किया जाये और उसे शुद्ध ज्ञान व परोपकार के कार्यों को करने में प्रवृत्त किया जाये।

यह कार्य वेद व आर्यसमाज को अपनाने पर ही हो सकता है। इस पर देश के बुद्धिजीवियों व मनीषियों को विचार करना चाहिये। आर्यसमाज को भी अपने भीतर आयी निष्क्रियता व संगठन की दुर्बलताओं पर विचार कर उसे ओजस्वी व तेजस्वी बनाने पर विचार करना चाहिये एवं कमियों व अन्य खामियों को दूर करना चाहिये। वेद व आर्यसमाज देश व विश्व को सुखी व सम्पन्न बनाने सहित सबको न्याय प्रदान कर उन्नत बनाने की एक निर्दोष व सम्पूर्ण व्यवस्था है। सबको आर्यसमाज को अपनाना चाहिये व आर्यसमाज से सहयोग करना चाहिये।

हम क्यों हारे? दास्तान-ए-गद्दारी (13)

❑ राजेश आर्य, गांव आट्टा, जिला पानीपत मो० 9991291318

प्रिय पाठकवृन्द! जिस प्रकार चाफेकर बन्धुओं के बलिदान सुनकर वीर बालक विनायक दामोदर सावरकर ने देश की स्वतन्त्रता के लिए अंग्रेजों से लड़ने की प्रतिज्ञा की थी, उसी तरह आर्यवीर रामप्रसाद बिस्मिल ने लाहौर षड्यन्त्र केस में भाई परमानन्द की फाँसी की सजा को सुनकर अंग्रेजों से लड़ने की प्रतिज्ञा की। अपनी आत्मकथा में वे लिखते हैं—

''श्रीयुत् भाई परमानन्द जी में मेरी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उनकी लिखी हुई 'तवारीख हिन्द' पढ़कर मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा था। लाहौर षड्यन्त्र का फैसला अखबरों में छपा। भाई परमानन्द जी को फाँसी की सजा पढ़कर मेरे शरीर में आग लग गई। मैंने विचारा कि अंग्रेज बड़े अत्याचारी हैं, इनके राज्य में न्याय नहीं, जो इतने बड़े महानुभाव को फाँसी की सजा का हुक्म दे दिया। मैंने प्रतिज्ञा की कि इसका बदला अवश्य लूँगा। जीवनभर अंग्रेजी राज्य को विध्वंस करने का प्रयत्न करता रहूँगा।''

डी.ए.वी. स्कूल औरैया (इटावा, उत्तर-प्रदेश) में पं० गेंदालाल दीक्षित सामान्य से अध्यापक थे। उनके मन में देश की स्वतन्त्रता के लिए कुछ करने की आई, तो उन्होंने 'मातृवेदी' दल बनाया। पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल इस दल में शामिल हो गये। हथियारों के लिए धनियों से चन्दा मांगा, पर किसी ने कुछ नहीं दिया। फिर लगभग 75 व्यक्तियों के इस दल ने इटावा, औरैया, मैनपुरी आदि कई स्थानों पर सफल डाके डाले। इससे राष्ट्रीय आन्दोलन को बढ़ावा मिला, पर पुलिस ने अपना गुप्तचर 'मातृवेदी' दल में भर्ती कर दिया। एक दिन उसने भोजन में विष मिला दिया और इस दल को घेरकर पुलिस ने गोलियां चलाईं। कुछ विष से और कुछ गोलियों से लगभग 30 आदमी मारे गए। दीक्षित जी की आंख में एक छर्रा लगा। वे अपने 26 साथियों के साथ पकड़े गए।

13 फरवरी 1919 को मैनपुरी षड्यन्त्र के नाम से इन पर मुकदमा चलाया गया। जब ये ग्वालियर के किले में बन्द थे, तो बिस्मिल जी ने इन्हें छुड़ाने की योजना बनाई, पर दीक्षित जी ने ही योजना की सफलता की संदिग्धता और भयानकता को देखते हुए मना कर दिया।

बाद में एक साथी के साथ जेल से फरार हो गये, पर तब तक ये क्षयरोग (टी.बी.) से ग्रस्त हो चुके थे। जैसे-तैसे घर पहुँचे। पैदल चलने में बहुत बीमार व थके हुए थे। पिता ने यह समझकर कि घर वालों पर आपत्ति न आए, पुलिस को सूचना देनी चाही। दीक्षित जी ने पिता से बड़ी विनय-प्रार्थना की और दो-तीन दिन में घर छोड़ दिया। वे दिल्ली जाकर एक प्याऊ पर पानी पिलाने लगे। बीमारी बहुत बढ़ने पर पत्र लिखकर पत्नी व छोटे भाई को बुलाया। वे इन्हें सरकारी अस्पताल में दाखिल करवाकर चले गये। 21 दिसम्बर 1920 को यह महान् सपूत अमर पथ का पथिक बन गया और अस्पताल वालों द्वारा लावारिस की तरह शव का अन्तिम संस्कार कर दिया गया।

पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल ने बड़े दु:ख के साथ लिखा है—''स्वदेश की कार्यसिद्धि में पं० गेन्दालाल दीक्षित ने जिस नि:सहाय अवस्था में अन्तिम बलिदान दिया, उसकी स्वप्न में भी आशंका न थी। ...भारतवर्ष की एक महान् आत्मा विलीन हो गई और देश में किसी ने जाना भी नहीं।''

मैनपुरी षड्यन्त्र में बिस्मिल जी के नाम का भी वारण्ट था। वे भूमिगत हो गए। प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर आममुआफी दी गई, तब वे सार्वजनिक रूप से प्रकट हुए। मामूली-सी घटना पर असहयोग आन्दोलन बन्द होने से देशभक्त तड़प उठे और उन्हें गांधी जी का नेतृत्व नीरस लगा। वे सशस्त्र आन्दोलन की तरफ चल पड़े।

पहली बार अण्डमान से आने के बाद शचीन्द्रनाथ सान्याल क्रान्तिकारी दल के पुनर्गठन के प्रयास में राजेन्द्र लाहिड़ी, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला आदि से मिले। 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के सदस्य बनकर बिस्मिल जी अपनी कुशलता से दल के नेता बन गए। पर इन देशभक्तों के पास न खाने को कुछ था, न पहनने को। सब पर कुछ न कुछ कर्ज भी हो गया था।

बिस्मिल जी ने लिखा है, ''कोमल हृदय नवयुवक मेरे चारों ओर बैठकर कहा करते—'पण्डित जी, अब क्या करें?' मैं उनके सूखे-सूखे मुख देख बहुधा रो पड़ता कि स्वदेश-सेवा का व्रत लेने के कारण फकीरों से भी बुरी दशा हो रही है। एक-एक कुर्त्ता तथा धोती भी ऐसी नहीं थी जो साबुत होती। ...एक समय क्षेत्र में भोजन करते थे, एक समय दो-दो पैसे के सत्तू खाते थे।''

ऐसी अवस्था में भी ये जीवनदानी सिर हथेली पर रखकर उस शक्ति से टकराने की हिम्मत रखते थे, जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता था और वास्तव में ये उससे दो-दो हाथ करने चल पड़े।

9 अगस्त 1925 को 18-28 की उम्र के दस युवकों ने काकोरी के पास रेल रोक कर सरकारी खजाना लूट लिया। वे युवक थे—रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, राजेन्द्र लाहिड़ी, अशफाक उल्ला, शचीन्द्रनाथ बख्शी, मन्मथनाथ गुप्त, केशव चक्रवर्ती, मुकुन्दीलाल गुप्त, मुरारीलाल और बनवारीलाल। मित्रों ने बिस्मिल जी को सावधान कर दिया था कि बनवारीलाल आपत्ति पड़ने पर अटल न रह सकेगा, इसलिए इसे गुप्त कार्य में न लिया जाए। पर उस पर विश्वास कर बिस्मिल जी बाद में पछताए।

यह बनवारीलाल सरकारी गवाह बन गया और उसने सब साथियों का भेद बता दिया। लगभग 40 व्यक्ति पकड़े गए। चन्द्रशेखर आजा जीते जी पकड़े ही न जा सके, अशफाक उल्ला और शचीन्द्रनाथ बख्शी भी बहुत समय (डेढ वर्ष) तक गिरफ्तार होने से बचे रहे। 18 महीने मुकदमा चलने के बाद 6 अप्रैल 1927 को काकोरी षड्यन्त्र का निर्णय सुनाया गया—

रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह और राजेन्द्र लाहिड़ी को फाँसी की सजा सुनाई गई। ठाकुर रोशनसिंह, शचीन्द्र नाथ सान्याल, जोगेशचन्द्र चटर्जी आदि बहुत-से तो काकोरी काण्ड में शामिल भी नहीं थे, फिर भी शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजीवन काला पानी का कारावास दिया गया। मन्मथनाथ गुप्त को 14 वर्ष का कठोर कारावास, जोगेन्द्रचन्द्र चटर्जी, मुकुन्दीलाल गुप्त, गोविन्द चरण काक, राजकुमार सिन्हा और रामकृष्ण खत्री को दस-दस साल की सजा हुई, जो बाद में पहले तीन (की), सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य तथा विष्णुशरण दुब्लिश की कालेपानी में बदल दी गई। भूपेन्द्रनाथ सान्याल, रामदुलारे त्रिवेदी, प्रेमकृष्ण खन्ना और रामनाथ पाण्डेय को 5 वर्ष व प्रणवेश चटजी को 4 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई। बाद में चले मुकदमे में अशफाक उल्ला खां को मृत्युदण्ड व शचीन्द्रनाथ बख्शी को आजीवन कारावास (काला पानी) की सजा सुनाई गई।

एक व्यक्ति की गद्दारी से क्रान्तिकारी संगठन का इतना विनाश हो गया। मित्र की गद्दारी से दुःखी होकर कवि-हृदय बिस्मिल जी ने लिखा है—किन्तु आस्तीन में सांप छिपा हुआ था, ऐसा गहरा मुंह मारा कि चारों खाने चित्त कर दिया।

जिन्हें हम हार समझते थे, गला अपना सजाने को।
वही अब नाग बन बैठे, हमें ही काट खाने को॥

स्मरण रहे, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल ने उस सरकारी वकील पण्डित जगत नारायण मुल्ला को भी याद किया है, जिसने उन्हें फाँसी चढ़वाने में पूरा जोर लगाया। (काकोरी केस के एक अभियुक्त मन्मथनाथ गुप्त के अनुसार अंग्रेज सरकार की ओर से पण्डित जगत नारायण मुल्ला को इस मुकदमे की पैरवी में रोज 500 रुपये मिलते थे) वीर भगतसिंह ने बिस्मिल जी के एक पत्र की अंतिम पंक्तियाँ लिखी हैं—''सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पण्डित जगत नारायण (इलाहाबाद में पंडित मोतीलाल नेहरू का जूनियर साथी व नेहरू परिवार का समधी) को अन्तिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रुपयों से चैन की नींद आए। बुढ़ापे में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।''

सजा मिलने के बाद का वर्णन करते हुए भगतसिंह ने लिखा है, छोटों ने बड़ों के पैरों पर झुककर नमस्कार किया। उन्होंने छोटों को आशीर्वाद दिया, जोर से गले मिले और आह भरकर रह गये। भोज दिए गए। जाते हुए श्री रामप्रसाद जी ने बड़े दर्दनाक लहजे में कहा—

दरो-दीवार पे हसरत से नज़र करते हैं।
खुश रहो एहले वतन हम तो सफर करते हैं॥

यह कहकर वह लम्बी, बड़ी दूर से यात्रा पर चले गए। दरवाजे से निकलते समय उस अदालत के बड़े भारी

शेष पृष्ठ 16 पर....

महाकुम्भ—एक विचार मन्थन

❑ महावीर 'धीर' शास्त्री, प्रेमनगर, रोहतक-9466565162

महाकुम्भ का अर्थ है—बड़ा घड़ा। घड़े में पानी, दूध, घी, सीरा, शक्कर, अन्न, आटा आदि कोई भी पदार्थ भरा जाता है। प्रश्न है कि वर्तमान के महाकुम्भ में क्या भरा जाता है? यह तो निश्चित ही है कि आज के कुम्भ में भी कुछ अवश्य ही भरा जाता है, वह कुछ और नहीं केवल और केवल भाव या विचार ही हो सकता है। वेदों में आकाश को भी समुद्र कहा गया है—**'समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत'**। विचार भी समुद्र रूप है। जब विचारसमूह रूपी सर्प की रस्सी से जल, थल, अंतरिक्ष की मथनी बनाकर समस्त सृष्टि की शक्तियों का विलोडन मन्थन व विश्लेषण किया गया और जल, थल, अंतरिक्ष से अनेक अमृतरूपी विचार निकलकर आए। किसी ने मणी-माणिक्य, मोती व रत्नों को अमृत बताया, किसी ने अन्न, जल, फल, पत्र, पुष्प, कन्दमूल को अमृत कहा, तो किसी ने वस्त्र प्रस्तर व विभिन्न धातुओं को अमृत माना, किसी ने प्रकृति में विद्यमान प्रकृति व पर्यावरण विनाशक महाविषैले पदार्थों से दूर रहने को अमृत जाना, लेकिन शिवजी ने कहा कि विषैले पदार्थों का संग्रहण मैं करता हूं, इनसे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं। विशेष अवसरों पर इनका सदुपयोग भी अमृत है। प्रतीक बना दिया कि शिवजी सभी विषों का पान कर गए, जिससे उनका कण्ठ नीला पड़ गया। लोग अन्धश्रद्धा में नीलकण्ठ पक्षी को भी शिवजी का रूप मानने लग गए। अनेक व्यक्ति नीलकण्ठ पक्षी देखते ही उसे प्रणाम करते हैं। विचार मन्थन के अंत में आचार्य धन्वन्तरि ने सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए स्वस्थ शरीर शान्त मन बुद्धि आत्मा के उत्कृष्ट उपाय आयुर्विज्ञान रूपी अमृत कलश प्रकट किया। सभी ने इसे ही सत्य अमृत माना। निश्चय हुआ कि इसे सभी गुरुजन व चिकित्सक समझें और जन-जन को समझाएं। गुरु बृहस्पति ने सबको आशीर्वाद दिया। बृहस्पति नक्षत्र में बारह वर्ष में महाकुम्भ का आयोजन होता है। यह हरद्वार, प्रयागराज, उज्जैन तथा नासिक के स्थानों पर होता है। जहां करोड़ों लोग पहुंचते हैं। ये लोग वहां जाकर क्या करते हैं? यही देखने में आता है कि लोग वहां जाकर नदियों में स्नान करते हैं। वहां कुछ पंडितजन उनसे पूजा-पाठ कराने के नाम पर धन्धा चलाए हुए हैं। वे कहते हैं कि कुम्भ पर जो व्यक्ति स्नान करके पूजा करता है, उसकी सभी कामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। उसका जीवन सुखी हो जाता है। करोडों व्यक्ति गंगा स्नान करते हैं। पूजा करते हैं, लेकिन वे सभी सुखी नहीं हो जाते। संयोग से कोई ठीक रहता है, कोई नहीं रहता है। संयोग से तो जो गंगा स्नान नहीं करते हैं, उनमें से भी बहुत लोग ठीक रहते हैं। आज पूजा-पाठ को कामना पूर्ति का साधनमात्र मान लिया गया हैं। यह धर्म नहीं हो सकता है। धर्म तो अष्टांग योग ही है। क्या महाकुम्भ के अवसर पर दुःखों से मुक्ति के साधन अष्टांग योग का अभ्यास कराया जाता है? स्नानमात्र से सुख कैसे सम्भव हो सकता है? क्या आज किसी मठ मन्दिर में अष्टांग योग सिखाया जाता है? योगाभ्यास तो प्रत्येक शिक्षा संस्थान में नियमित होना चाहिए।

महाकुम्भ, अर्धकुम्भ, कुम्भी ये सब विद्वानों, साधु-संतों, योगियों के विचार मंथन के स्थल हैं। यहां पर सामान्यजन भी सन्तों के विचारों से लाभान्वित होने के लिए आते थे। स्नान, ध्यान, दान तो सामान्य प्रक्रिया थी। मुख्य कार्य मुक्ति मार्ग को हृदयंगम करना ही होता था। समय की उठापटक में जीवन को सुखी समृद्ध शान्त बनाने वाला हमारा यह ज्ञानकुम्भ का महाकुम्भ, अज्ञानता में विकृत हो गया, क्योंकि मूल तन्त्र शिक्षा तन्त्र बिगड़ने से विश्वगुरु आर्यावर्त भारत की प्रत्येक विधि बिगड़ गई। महाकुम्भ पर भी ज्ञानगंगा के स्थान पर स्नानगंगा ही शेष रह गई है। ज्ञानगंगा की अविरल धारा देश में फिर से बहने लगे, इसके लिए सभी सन्त-साधुओं और अखाड़ा परिषदों को देश में जातिविहीन समान रुचिकर आवासीय निःशुल्क सर्वांगीण पूर्ण गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को स्थापित करने का निर्णय करना होगा। सभी मन्दिरों, आश्रमों, मठों तथा नगर गांवों में आवश्यकता अनुसार गुरुकुल स्थापित हों। समाज और सरकार गुरुकुलों को सहयोग करते रहें। सर्वश्रेष्ठ विद्वान् चरित्रनिष्ठ व्यक्ति ही शिक्षक हों। गुरुकुल से ही कार्य नियुक्ति तथा माता-पिता शिक्षक व युवक-युवतियों के सहयोग से वैदिक रीति से विवाह-संस्कार करके युवाओं को आशीर्वाद व सत्कार पूर्वक घर भेजा जाए। इस दृढ़निश्चय के साथ महाकुम्भ का महाघोष होना चाहिए।

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री विश्वमित्र आर्य, ग्राम लूखी, जिला रेवाड़ी निवासी का 08.01.2025 को 101 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। उनकी अन्त्येष्टि 09.01.2025 को वैदिक रीति से की गई। अन्त्येष्टि संस्कार में सभा की तरफ से श्री सत्यवान आर्य कार्यालयाधीक्षक, श्री ओमप्रकाश शास्त्री मुख्य गणक, स्वामी नित्यानन्द जी, आचार्य सन्तराम आर्य, श्री धर्मपाल शास्त्री व श्री अजय शास्त्री भाण्डवा तथा श्री रामनिवास शास्त्री कोसली सम्मिलित हुए।

महाशय जी ने वेद विद्यालय गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली से उपाधि प्राप्त करके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में भजनोपदेशक के पद पर प्रचार कार्य किया। सभा के बंटवारे के बाद इन्होंने हरयाणा सभा में रहते हुए प्रचार कार्य किया। यह अपने भजनों की स्वयं रचना करके जनता को उपदेश देते रहे। इन्होंने हरयाणा प्रान्त में गांव-गांव जाकर पाखण्ड-खण्डन, अन्ध-विश्वास, नारी-शिक्षा, अश्लीलता, शराबबन्दी तथा नशा के विरोध में जन-जागरण के लिए प्रचार किया। सभा से सेवानिवृत्ति के उपरान्त सभा इन्हें सम्मानित भत्ता देकर सम्मानित करती रही है।

महाशय जी के पिता श्री महात्मा चुन्नीलाल जी स्वतन्त्रता सेनानी थे। लूखी आर्यसमाजियों एवं स्वतन्त्रता सेनानियों का गांव है। महाशय जी अपने जीवन के अन्तिम समय तक योगासन-प्राणायाम करते रहे हैं। महाशय जी सैद्धान्तिक व्यक्ति रहे हैं। इनका व्यक्तिगत जीवन मृदुभाषी, सादा तथा सरल रहा है। इन्होंने अपने सुपुत्र श्री ऋषिदेव शास्त्री को गुरुकुल दीनानगर (पंजाब) में पढ़ाया। यह अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इनके निधन पर शोक प्रकट करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि शोकाकुल परिवार को दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

—ओमप्रकाश शास्त्री, मुख्य गणक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक

श्री दुलीचन्द जी वाजपेयी (दिव्य मुनि) का निधन

श्री दिव्यमुनि जी ने पूरे मेवात क्षेत्र में आर्यसमाज का बीभत्स कार्य किया। आप आर्य वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक थे। इसके साथ-साथ आप बेटियों की शादियाँ संस्था के माध्यम से कराते थे। आपकी आयु लगभग 65 वर्ष की थी। स्वामी गणेशानन्द जी महाराज (रिवाला धाम कोठपुतली) ने आपको वानप्रस्थ की दीक्षा दी। लगभग दो वर्ष पूर्व आप वानप्रस्थ की दीक्षा लेने के बाद उन्हीं के आश्रम में रह रहे थे। आपको कुछ समय पूर्व कैंसर हो गया था। पिछले 17 दिसम्बर 2024 को आपने अमृता हॉस्पीटल फरीदाबाद में आखिरी सांस ली। आपने बीमार रहते हुए भी संस्था के माध्यम से 21 गरीब लड़कियों की शादी कराई थी। आपने आर्यसमाज के बड़े-बड़े सम्मेलन मेवात क्षेत्र में आयोजित करवाए जिनमें आपकी अहम् भूमिका रही। आपके जाने से मेवात आर्यजगत् में शोक की लहर है। आप दिव्यमुनि के नाम से विख्यात थे।

श्री दिव्यमुनि जी के आकस्मिक निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक श्रद्धांजलि देते हुए हार्दिक शोक प्रकट करती है तथा दिवंगत आत्मा की सद्गति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

—उमेश कुमार आर्य, प्रधान—आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात

अपने मेडिकल कॉलेज डहकोरा में डॉ० जयभगवान जी ने वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया। आचार्य वेदमित्र जी, आचार्य सत्यदेव जी की उपस्थिति में यज्ञोपरान्त कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आदर्शवादी आर्य परिवार का परिचय

श्रीमती चमेलीदेवी आर्या के प्रपौत्र, श्री मुन्नालाल आर्य-श्रीमती शारदादेवी आर्या के सुपौत्र एवं श्री गजानन्द आर्य-श्रीमती अंकिता आर्या के प्रिय पुत्र दिव्यांशु आर्य निवासी गोविन्दगढ़ जिला अलवर (राजस्थान) का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न

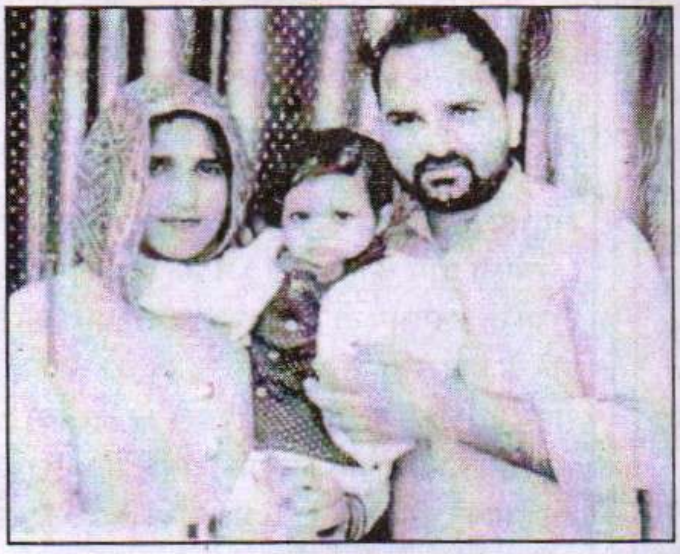

श्री गजानन्द आर्य-श्रीमती अंकिता आर्या निवासी गोविन्दगढ़ जनपद अलवर (राज०) के नवजात सुपुत्र प्रिय दिव्यांशु आर्य का नामकरण संस्कार दिनांक 13.12.2024 को आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् पं० नन्दलाल निर्भय ग्राम बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) ने सम्पन्न कराया।

यज्ञोपरान्त पण्डित जी ने बताया कि परमपिता परमात्मा की कृपा से श्री मुन्नालाल आर्य जी के परिवार में एक नया सदस्य दिव्यांशु के रूप में आया है। वास्तव में परमात्मा सारे संसार का स्वामी है। उसकी शक्ति के बिना संसार में एक पत्ता भी नहीं हिलता। वे परिवार बड़े भाग्यशाली हैं। जिन घरों में यज्ञ आदि शुभकर्म होते हैं। सज्जनो विश्वास करो, जिन घरों में वैदिक विद्वानों के प्रवचन होते हैं, वहाँ देवताओं का निवास होता है। पण्डित जी ने यज्ञोपरान्त बाल दिव्यांशु को आशीर्वाद भजन गाकर इस प्रकार दिया—

इस कुल का यह दीपक प्यारा, बालक आयुष्मान हो।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्व गुणों की खान हो॥
बने फूल-सा सुन्दर कोमल, सबको सौरव दान करे।
दुष्टों का भय ना खाए, सत्पुरुषों का सम्मान करे।
नाम अमर कर दे दुनिया में, भारत माँ की शान हो।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्व गुणों की खान हो॥
श्रीराम अरु श्रीकृष्ण-सा, यह बालक गुणवान बने।
जगद्गुरु ऋषि दयानन्द-सा, ईश्वरभक्त महान् बने।
करे धर्म का काम जगत् में, बालक की पहचान हो।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्व गुणों की खान हो॥
बने लाजपत जैसा नेता, बिस्मिल जैसा वीर बने।
ऊधमसिंह अरु भगतसिंह-सा, देशभक्त रनधीर बने।
स्वामी श्रद्धानन्द बने यह, इसे धर्म का ज्ञान हो।
तेजस्वी, वर्चस्वी, निर्भय, सर्व गुणों की खान हो॥

इस भजन को सुनकर सैकड़ों की संख्या में उपस्थित यज्ञप्रेमी झूम उठे। पण्डित जी ने स्पष्ट कहा कि—

मुन्नालाल आर्य जी, करते हैं नित यज्ञ।
प्रभु की है कृपा बड़ी, ईश्वर है सर्वज्ञ॥
भला इसी में सज्जनो, करो ईश गुणगान।
वेदों के पथ पर चलो, यदि चाहो कल्याण॥

इस अवसर पर श्री राधेश्याम आर्य, श्री पूर्णचन्द आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा श्री मूलचन्द आर्य, श्री ओमदीप आर्य, श्री नवल किशोर शर्मा अलवर, श्री महेश आर्य रेवाड़ी ने भी बालक को आशीर्वाद दिया। यज्ञ में श्री धर्मेन्द्र शर्मा, श्री जयप्रकाश आर्य, श्री दीपक आर्य, श्री मनीष शर्मा, श्रीमती उर्मिला देवी, श्रीमती सविता देवी, श्रीमती मनीषा आर्या, श्रीमती सोनू शर्मा आदि उपस्थित थे। अन्त में शान्तियज्ञ के पश्चात् नामकरण संस्कार समारोह का समापन किया गया।

हम क्यों हारे ? दास्ताने.... पृष्ठ 13 का शेष....

रैंकन थिएटर हाल की भयावह चुप्पी को एक आह भरकर तोड़ते हुए उन्होंने फिर कहा—

हाय, हम जिस पर भी तैयार थे मर जाने को,
जीते जी हम से छुड़ाया उसी काशाने को॥

हम लोग एक आह भरकर समझ लेते हैं कि हमारा फर्ज पूरा हो गया। हमें आग नहीं लग उठती, हम तड़प नहीं उठते, हम इतने मुर्दा हो गए हैं...।''

17 दिसम्बर 1927 को राजेन्द्र लाहिड़ी को गोण्डा जेल में, 18 दिसम्बर को रोशनसिंह को इलाहाबाद जेल में, 19 दिसम्बर को रामप्रसाद बिस्मिल और अशफाक उल्ला को क्रमशः गोरखपुर व फैजाबाद में फाँसी दे दी गई। वे वीर तो मुक्त हो गये, पर उनकी माँ अभी बन्धनों में जकड़ी हुई थी।

यज्ञ हेतु दान देकर पुण्य के भागी बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा में प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ किया जाता है और पर्यावरण शुद्धि के लिए रोहतक जिले के सरकारी, गैर सरकारी विद्यालयों और गांव-गांव में यज्ञ व वेद प्रचार का आयोजन किया जाता है। इस महायज्ञ में आप लोग अपने बच्चों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व अन्य उपलक्ष्यों पर दान देकर पुण्य के भागी बनें। संस्था सदैव आपकी आभारी रहेगी।

यज्ञदान हेतु बैंक खाता

ACCOUNT NAME - ARYA PRATINIDHI SABHA HARYANA
BANK NAME - PNB JHAJJAR ROAD ROHTAK
Account No. - 0406000100426205
IFSC - PUNB0040600
MICR - 124024002

श्री ....

पता ...... ,क आर्य सन्देश
15

....

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा